❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विभिन्न भाषाओं में दयानन्दकृत अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश"

वर्ष 47, अंक 32 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 24 जून, 2024 से रविवार 30 जून, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

200वें जयन्ती वर्ष एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के अवसर पर

200वीं सत्य पथ महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की जीवनी को बनाये स्वाध्याय का नियमित स्तम्भ - धर्मपाल आर्य

यह सब जानते ही हैं कि ऋषि मुनियों की पुण्य भूमि भारत में 19वीं शताब्दी में महर्षि दयानंद सरस्वती का जन्म 12 फरवरी 1824 में उस समय हुआ, जब भारत माता परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी, चारों तरफ अज्ञान, अविद्या, अंधकार फैला हुआ था। मानव समाज अनेक सामाजिक कुरीतियों में जकड़ा हुआ था, जातिवाद, छुआछूत ऊंच-नीच और भेदभाव का चारों ओर बोलबाला था। महर्षि ने संपूर्ण विपरीत परिस्थितियों को स्वयं नजदीक से देखा और अनुभव किया कि भोली भाली जनता अज्ञान, अविद्या के कारण दुख पीड़ा और संतापों से कष्ट क्लेश में जीवन बिता रही है। महर्षि ने घोर तप, त्याग, साधना, स्वाध्याय के तपोबल से एक लंबी संघर्ष पूर्ण यात्रा की।

सन् 1860 में महर्षि दयानंद मथुरा में स्वामी विरजानंद दंडी के तपोवन में पहुंचे और तीन वर्ष गुरु से शिक्षा प्राप्त कर भारत के नव निर्माण के लिए समर्पित हो गये। इस दौरान महर्षि ने अनेकों शास्त्रार्थ किए, सत्यार्थप्रकाश सहित ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका, संस्कारविधि इत्यादि अनेकानेक ग्रंथ लिखे। विधर्मी और विरोधियों से संघर्ष किया और विजय पताका फहराई। उनके ऊपर जानलेवा हमले किए गए, विष दिया गया, प्रलोभन और दबाव बनाए गए, लेकिन महर्षि ने वेद मार्ग पर चलते हुए सबका डटकर सामना किया। भारत की आजादी के लिए क्रांतिकारी अलख जगाई, परिणाम स्वरूप क्रांतिकारी टोलियां निकलने लगीं और एक नया वातावरण निर्मित हो गया।

महर्षि दयानंद ने 1863 में गुरु विरजानंद दंडी से शिक्षा प्राप्त कर जो आधुनिक भारत के नव निर्माण का जो संकल्प लिया था, उसके अनुरूप उन्होंने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की और उसके उपरांत केवल 8 वर्ष महर्षि को मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने का अवसर मिला। लेकिन महर्षि ने जो भारत राष्ट्र और विश्व के लिए किया है वह युगों-युगों तक अविस्मरणीय रहेगा और उनके पद चिन्हों पर चलकर ही भारत ने आज आजादी के 75 वर्षों पर गौरव अनुभव करते हुए अमृत महोत्सव मनाया, जल थल और नभ में नए-नए कीर्तिमान स्थापित हो रहे हैं। संपूर्ण विश्व में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए भारत अग्रसर है। ऐसे अनोखे, अनूठे महर्षि का जीवन चरित्र यूं तो हमारे अनेकानेक महापुरुषों ने अपनी लेखनी से अद्‌भुत और अनुपम लिखा है, जिनमें पंडित लेख राम, स्वामी सत्यानंद, डॉक्टर रघुवंश, देवेंद्र मुखोपाध्याय, रामविलास शारदा, गोपाल राव, भवानी लाल भारतीय, पंडित लक्ष्मण आर्य उपदेशक और अन्य अनेक लेखक महापुरुषों के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त करना चाहिए। किंतु हम आर्यजनों को महर्षि के आदर्श और अनुकरणीय जीवन का नियमित स्वाध्याय भी अवश्य करना चाहिए।

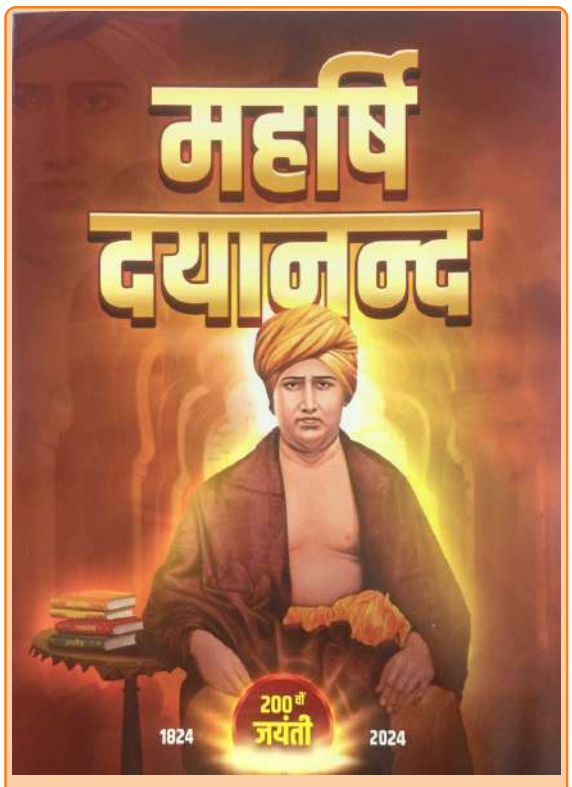

महर्षि का 200वां जयंती वर्ष और आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस का मध्य काल चल रहा है, सभी आर्यजनों से अनुरोध है कि महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र और आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास का स्वाध्याय अवश्य करें। आर्य समाज के लिए यह स्वर्णिम अवसर है कि हम स्वयं उनके बताए हुए पथ पर चलने हेतु उनके जीवन वृतांतों से सीखें और संपूर्ण मानव जाति को उनके पद चिन्हों पर चलने की प्रेरणा दें। जिससे संपूर्ण विश्व को आर्य बनाने का सपना साकार हो।

महर्षि ने जो भारत राष्ट्र और विश्व के लिए किया है वह युगों-युगों तक अविस्मरणीय रहेगा और उनके पद चिन्हों पर चलकर ही भारत ने आजादी के 75 वर्षों पर गौरव अनुभव करते हुए अमृत महोत्सव मनाया, जल थल और नभ में नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। ऐसे अनोखे, अनूठे महर्षि का जीवन चरित्र यूं तो हमारे अनेकानेक महापुरुषों ने अपनी लेखनी से अद्‌भुत और अनुपम लिखा है, जिनमें पंडित लेख राम, स्वामी सत्यानंद, डॉक्टर रघुवंश, देवेंद्र मुखोपाध्याय, रामविलास शारदा, गोपाल राव, भवानीलाल भारतीय, पंडित लक्ष्मण आर्य उपदेशक और अन्य अनेक लेखक महापुरुषों के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त करना चाहिए। किंतु हम आर्यजनों को महर्षि के आदर्श और अनुकरणीय जीवन का नियमित स्वाध्याय भी अवश्य करना चाहिए।

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस समारोह की तैयारियों हेतु बैठक

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की अमर वाटिका आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के भव्य और ऐतिहासिक समारोह की तैयारियों को लेकर मुम्बई सांताक्रुज आर्य समाज के प्रांगण में बैठक संपन्न हुई। जिसमें श्री प्रकाश आर्य, प्रधान, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल, श्री विनय आर्य, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री वेद प्रकाश गर्ग, प्रधान मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री महेश वेलानी, मंत्री मुम्बई सभा एवं अनेक अन्य महानुभाव उपस्थित रहे। ज्ञातव्य है कि आगामी वर्ष में आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष के विभिन्न आयोजनों का शुभारम्भ होगा।

देववाणी-संस्कृत

कुशल सारथी की महिमा

वेद-स्वाध्याय

रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्रयत्र कामयते सुषारथिः।
अभीशूनां महिमानं पनायत मनः पश्चादनु यच्छन्ति रश्मयः।। -ऋ. 6/75/6
ऋषिः **पायुर्भारद्वाजः।।** देवता - **सारथिः, रश्मयः।।** छन्दः **जगती।।**

शब्दार्थ - **रथे तिष्ठन्** = रथ पर पीछे बैठा हुआ **सुषारथिः** = अच्छा सारथि **पुरः** = आगे लगे हुए, आगे- आगे चलने वाले **वाजिनः** = घोड़ों को यत्र-यत्र **कामयते** = जहां-जहां चाहता है वहां **नयति** = ले-जाता है। **अभीशूनाम्** = बागडोरों की, या मन की वृत्तियों की **महिमानम्** = महिमा की **पनायत** = स्तुति करो, क्योंकि **पश्चात्** = पीछे लगी हुई भी ये **मनः** = मन (सारथि) की **रश्मयः** = रश्मियां, रासें, आगे लगे हुए घोड़ों को **अनुयच्छन्ति** = अपने अनुकूल संयत रखती हैं।

विनय - रथ में पीछे बैठा हुआ भी सारथि आगे-आगे चलने वाले घोड़ों को ऐसा काबू रखता है, अपने वश में रखता है कि उन्हें जिधर चाहता है उधर ही ले जाता है। यह कुशल सारथि की महिमा है, पर पीछे बैठा सारथि आगे लगे हुए घोड़ों से जिस साधन द्वारा अपना सम्बन्ध उन्हें काबू में रखता है, असल में तो उस साधन की अर्थात् अभीशुओं (बागडोर) की स्तुति करनी चाहिए। ये रश्मियां (रासें) ही हैं जो कि घोड़ों को सारथि की इच्छा अनुकूल संयत रखती हैं; घोड़ों को लगाम लगाये रखती हैं। क्या तुमने इन (अभीशुओं) बागडोरों के महत्त्व को समझा? पर ये तो बाहरी अभीशु या रश्मियां हैं। असली रश्मियां तो वे हैं जोकि मन नामक अन्तर ज्योति की वृत्तिरूप किरणें हैं। अन्तरात्मारूपी सूर्य की किरणें ही वास्तविक अभीशु या रश्मियां हैं जिनके द्वारा वह अन्दर का देव बाहर के साथ सम्बन्ध जोड़े हुए हैं और अपने सब बाह्य जगत् को वश में रख रहा है। वेद ने तो कहा है कि यह मनोदेव ही है जोकि कुशल सारथि के समान इधर-उधर लिये फिरता है (यजुः. 34/6)। वास्तव में यह पीछे बैठा हुआ अन्तरात्मा (मनोदेव) अपनी रश्मियों द्वारा ही, अपनी वृत्तियों व सङ्कल्पों द्वारा ही आगे बैठे हुए और स्वतन्त्र दीखनेवाले सब बाह्य जगत् को चला रहा है। हे मनुष्यो! इन मनोवृत्तियों, मनः सङ्कल्पों की महिमा को अनुभव करो। इन रश्मियों को, इन बागडोरों को दृढ़ता से अपने हाथों में पकड़कर कुशल सारथि की भांति अपने-आप को चलाओ, अपने-आप पर शासन करो; अपने शरीर को, अपने हाथ-पैर आदि कर्मेन्द्रियों और अपनी ज्ञानेन्द्रियों को जुड़े हुए अपने घोड़ों की भांति अपनी इच्छानुसार जहां चाहो वहां ले-जाओ और जहां न चाहो वहां न ले-जाओ। वास्तव में इन रश्मियों को हाथ में रखकर तुम जो चाहो वह कर सकते हो। बस, केवल इन मनोवृत्तियों, मनः सङ्कल्पों को दृढ़ता से पकड़ लेने की देर है। फिर तुम अपने-आपको जहां जैसा चलाना चाहोगे वैसे ही तुम्हारी इन्द्रिय आदि सबको चलना होगा। तुम आत्मवशी हो जाओगे, तब तुम देखोगे कि तुम जहां अपने-आपको जैसा चाहते हो वैसा हिलाते हो, वहां अपने सब बाह्य संसार को भी जैसा चाहते हो वैसा हिला रहे हो। यह सब अभीशुओं की, रश्मियों की महिमा है।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

पंजाब में खालसा पंथ को चुनौति देने को तैयार है ईसाई मिशनरियां

ईसा मसीह दा खालसा-सैंटा क्लॉज दी फतह

गुरु गोविन्द सिंह जी ने जब मुगलों के विरुद्ध खालसा पंथ की स्थापना की और युद्धघोष का नारा दिया - '**वाहेगुरु जी दा खालसा, वाहे गुरुजी दी फतह**' तब किसने सोचा होगा कि गुरु गोविन्द सिंह जी के 350 साल बाद ये नारा बदलकर हो जायेगा 'ईसा मसीह दा खालसा, सेंटा क्लोज दी फतह'। उन्होंने नहीं सोचा होगा कि इस पंजाब की वीर भूमि पर 'नाचे यीशु दी बेटियां' जैसे गीत गाये जायेंगे। किसने सोचा होगा कि सिख गुरुओं की जगह जीसस ले लेगा। ग्रन्थियों का स्थान डिजाइनर सूट और महंगी कलाई घड़ियाँ पहने पादरी ले लेंगे।

आजकल जीसस के प्रतिनिधि ईसाइयों के सबसे बड़े पापा (पॉप) बीमार हैं। व्हीलचेयर से ही इधर-उधर जाते हैं। यूरोप या अमेरिका के किसी डॉक्टर के पास इनका इलाज नहीं है, ना ही कोई यूरोप और अमेरिका का पादरी इन्हें अब खड़ा कर सकता है। लेकिन पंजाब का पादरी बजिंदर सिंह यहाँ व्हीलचेयर पर बैठी एक महिला पर 'हाल्लेलुजाह' बोलकर पानी का छींटा देते है। वो महिला हिलने-डुलने लगती है। यह तथाकथित उपचार इतना प्रभावी हो जाता है कि 'महिला' भी थिरकते संगीत के बीच पादरी के साथ भांगड़ा-शैली के नृत्य में शामिल हो जाती है।

आखिर पंजाब में ये चल क्या रहा है? लालच, अंधविश्वास या आस्था? लोगों के मन में कई सवाल हैं, क्या सिख ईसाइ धर्म अपना रहे हैं? पंजाब में आप जायेंगे तो गली मोहल्लो में दीवारों पर ईसाइ डेरों के पोस्टर आपको खूब नजर आएंगे। आपको नजर आयेंगे अल्सर, कैंसर जैसी बीमारी भगाने वाले पादरियों के पोस्टर यह सब पंजाब में आम हो चुका है।

ये पादरी लगभग सभी चमत्कारिक इलाज का वादा करते हैं, आमतौर पर उन करिश्माई युवा पुरुषों और महिलाओं द्वारा संचालित होते हैं जिनमें से अधिकांश धर्म परिवर्तन वाले ईसाई होते हैं। ये अपने हिन्दू या सिख नामों को भी बरकरार रखते हैं, हालांकि वे अपने नामों के पहले एक ईसाई धार्मिक पदवी जरूर लगा लेते हैं। जैसे कि प्रॉफेट बजिन्दर सिंह, अंकुर योसेफ नरूला, पास्टर हरप्रीत देओल खोजेवाला, पास्टर अमृत संधू, पास्टर कंचन मित्तल, पास्टर दविन्दर सिंह, पास्टर रमन हंस के अलावा गली मोहल्लो तक में हजारों पादरी बने घूम रहे हैं।

ये पादरी, जिन्हें परमेश्वर तक पहुंचने के माध्यम के रूप में देखा जाता है, दावा करते हैं कि वे हर संभव बीमारी और शारीरिक अक्षमता को ठीक कर सकते हैं। भूतों को भगा सकते हैं और यहां तक कि मृतकों को भी जीवित कर सकते हैं। उनके कहे अनुसार उनका दैवीय प्रभाव लोगों को वीजा प्राप्त करवाने, नौकरी दिलवाने, जीवन साथी की खोज करने, बच्चा पैदा करने, बेहतर राजनीतिक पद पाने आदि में मदद करने तक भी फैला हुआ है। हाँ ये खुद बीमार हो जाये या इनके बच्चे बीमार हो जाये, तो सीधा अस्पताल जाते हैं, लेकिन दूसरों को ये ठीक करने का दंभ भरते हैं।

गजब ये है कि इनके भक्तों की भी कमी नहीं है। इनके डेरों से कम-से-कम आधा दर्जन के पास बड़ी संख्या में अनुयायी हैं, और उनके 'उपचार और प्रार्थना' सत्र (हीलिंग एन्ड प्रेयर सेशंस) में हजारों की भीड़ जमा होती हैं। इनमे से कुछ की राज्य के लगभग सभी बड़े शहरों और कस्बों में शाखाएं भी हैं, जिसे देखकर लगता है कि पंजाब में ईसाइ धर्म का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है और मजहबी सिख तथा वाल्मीकि हिन्दू समुदायों के कई दलितों ने धर्मांतरण का विकल्प चुनना पसंद किया है। पंजाब के

विधानसभा चुनावों से ठीक पहले पंजाब के कुछ शीर्ष नेताओं ने इन मिनिस्ट्रीज के चर्चों में इनके 'आशीर्वाद' के लिए इस आशा के साथ दौरा किया कि शायद वे वोटों में परिवर्तित हो सकें। चुनाव से पहले तत्कालीन उपमुख्यमंत्री सुखजिन्दर रंधावा, राज्य कांग्रेस प्रमुख नवजोत सिद्धू, कैबिनेट मंत्री राणा गुरजीत सिंह और परगट सिंह सहित कई विधायकों ने उनके कई सामूहिक कार्यक्रमों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई थी। हालांकि, इनमें से कई चर्च न केवल अपने बेतुके और संभावित रूप से खतरनाक भी दावों और 'उपचार' की प्रथाओं के कारण विवादों में फंस गए हैं, बल्कि उनके वित्तीय लेनदेन में कथित अनियमितताओं के साथ-साथ उनसे जुड़े कुछ प्रमुख लोगों के व्यक्तिगत आचरण के बारे में भी चिन्ताए व्यक्त की जा रहीं है। इनमें से एक, बजिन्दर सिंह, के खिलाफ फिलहाल बलात्कार के एक मामले में मुकदमा भी चला रहा है।

सीमावर्ती इलाकों, जैसे कि गुरदासपुर, में छतों पर भी छोटे-छोटे चर्च स्थापित हो रहे हैं।

इनके बढ़ते हुए प्रभाव का एक संकेत इस बात से भी मिलता है कि विधानसभा चुनावों से ठीक पहले पंजाब के कुछ शीर्ष नेताओं ने इन मिनिस्ट्रीज के चर्चों में इनके 'आशीर्वाद' के लिए इस आशा के साथ दौरा किया कि शायद वे वोटों में परिवर्तित हो सकें। चुनाव से पहले तत्कालीन उपमुख्यमंत्री सुखजिन्दर रंधावा, राज्य कांग्रेस प्रमुख नवजोत सिद्धू, कैबिनेट मंत्री राणा गुरजीत सिंह और परगट सिंह सहित कई विधायकों ने उनके कई सामूहिक कार्यक्रमों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई थी। हालांकि, इनमें से कई चर्च न केवल अपने बेतुके और संभावित रूप से खतरनाक दावों और 'उपचार' की प्रथाओं के कारण विवादों में फंस गए हैं, बल्कि उनके वित्तीय लेनदेन में कथित अनियमितताओं के साथ-साथ उनसे जुड़े कुछ प्रमुख लोगों के व्यक्तिगत आचरण के बारे में भी चिन्ताएं व्यक्त की जा रहीं है। इनमें से एक, बजिन्दर सिंह, के खिलाफ फिलहाल बलात्कार के एक मामले में मुकदमा भी चला रहा है।

लेकिन जिस तरीके से हजारों की भीड़ जमा हो रही है, उसे देखकर लगता है कि दुनिया के सभी भूत बिना वीजा और पासपोर्ट के पंजाब का रुख कर रहे हैं। सभी बुरी आत्माएं आम पंजाबी के अन्दर समा रही हैं। मंचों से जो नाटक चल रहा है, उस पर राज्य की अकाली दल से लेकर सिख मत रक्षक निहंग हो या शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति से लेकर अकाल तख्त के जत्थेदार तक कोई ठोस आवाज नहीं उठा रहे हैं।

- जारी पृष्ठ 7 पर

बाल बोध

बुरी संगति से बचें विद्यार्थी

.....आप जैसे लोगों के बीच बैठेंगे, आपके विचार और भावनाएं वैसी ही बन जाएंगी। बुरे लोगों का दुष्प्रभाव बहुत जल्दी काम करता है। चुनकर खाते हो, चुनकर पहनते हो तो चुनकर अच्छी किताबें अपने पास रखो और उनके सुन्दर वाक्य प्रतिदिन पढ़ो। जिससे विचारों में पवित्रता आए। पवित्र विचारों की खुशबू आपको महकाती रहेगी। जैसे किताबों में रखे गुलाब महक देते हैं। अकेले रह लेना, मगर गलत लोगों में मत बैठना। अविवेक, निर्दयता, हिंसा, तिकड़म लगाना, योग्य व्यक्ति को टांग लगाकर गिराना, बुरी संगति का परिणाम है।..... जो यह कहे कि चोरी करना पाप नहीं, चोरी करते पकड़े जाना पाप है, जो गुनाहगार होने में शर्मिन्दगी महसूस नहीं करता, ऐसे लोग समाज में बुराई को बढ़ाने का कार्य करते हैं। मासूम व्यक्ति भी ट्रेंड हो जाता है बुरी संगति में। बीस साल तक बच्चे को अच्छे संस्कार देकर राम बनाने की कोशिश करने पर भी वह राम नहीं बनता, मगर बीस दिन की बुरी संगति उसे रावण बनाने में कसर नहीं छोड़ती। बुराई का रंग जल्दी चढ़ता है, इसलिए कुसंग से सदा सावधान रहें।.....

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए वह जैसे लोगों का संग करता है, वैसा ही प्रभाव उसके जीवन पर पड़ता है। कहा जाता है—''कोयले की कोठरी में हाथ काले' अर्थात् कोयले की खान में उतरें और हाथ स्वच्छ रहें यह सम्भव नहीं है। आप कितनी भी सावधनी बरतें, कहीं-न-कहीं दाग जरूर लगेगा। इसी प्रकार आप कितनी भी कोशिश करें, संग के प्रभाव से बच नहीं सकते, प्रभाव अवश्य पड़ेगा। व्यक्ति कितना भी बचना चाहे, बच नहीं सकता।

संसार में भिन्न-भिन्न वृत्तियों के लोग हैं, व्यक्ति जैसे लोगों का संग करता है, वैसी उसकी प्रवृत्ति बन जाती है। इस जीवन में सब कुछ हमारा चाहा हुआ नहीं होता। व्यक्ति जो होना चाहता है उसमें बाधक बनती है बहुत-सी अनचाही सामाजिक परिस्थितियां। समाज में आप अकेले नहीं रह सकते, आपको सबके साथ की जरूरत है। इस गलतपफहमी में मत रहना कि तुम्हारा काम अकेले चल सकता है, तुम्हें हमेशा समाज की जरूरत पड़ेगी। स्वयं को इतना ऊंचा महान मत मान लेना कि 'मैं नहीं रहा तो दुनिया के काम रुक जाएंगे' दुनिया में प्रलय आ जाएगी। तुम रहो-न-रहो, दुनिया के काम चलते रहेंगे। समाज में रहते हुए तुम्हारा काम अकेले नहीं चलेगा। जीवन चलता है एक-दूसरे के तालमेल से, तुम किसी के सहयोगी बन जाओ, कोई तुम्हारा सहयोगी बन जाए, इसी का नाम जीवन है।

व्यक्ति के विकास में दूषित वृत्ति के लोग बाधा बनते हैं और व्यक्ति जो होना चाहता है, हो नहीं पाता। इसलिए निश्चय करो कि तुम्हारी उन्नति में जो बाधक हैं, उनका संग नहीं करना, वह तुम्हारे मित्र नहीं हो सकते। जिनकी संगति से जीवन में विकास हो, घर में प्यार और मन में उत्साह -उल्लास और शान्ति आए उनसे मित्रता करना। जल जैसे पात्र में रखा जाए, वैसा उसका रंग दिखाई देता है। ऐसे ही व्यक्ति जैसी संगति में रहता है उसके अनुसार उसका जीवन ढल जाता है। विलासी का संग होगा तो विलासी हो जाएगा। ज्ञानी, ध्यानी और सज्जनों का आदर्श सामने हो तो व्यक्ति के अन्दर धैर्य, क्षमा, कोमलता और सज्जनता आएगी। गन्दगी के ढेर के पास जाओगे तो सुगन्ध नहीं आएगी। बुरे लोगों का संग करोगे तो उनकी बुराइयों की दुर्गन्ध आपकी जिन्दगी को बर्बाद कर देगी और अच्छे लोगों की अच्छाई की सुगन्ध से आपकी जिन्दगी महक उठेगी।

आचार्य चाणक्य का कथन है—

योग्य स्वामी के पास आकर अयोग्य वस्तु भी सुंदरता बढ़ाने वाली हो जाती है। किन्तु अयोग्य के पास जाने पर योग्य काम की वस्तु भी हानिकारक हो जाती है। आप जैसे लोगों के बीच बैठेंगे, आपके विचार और भावनाएं वैसी ही बन जाएंगी। बुरे लोगों का दुष्प्रभाव बहुत जल्दी काम करता है। चुनकर खाते हो, चुनकर पहनते हो तो चुनकर अच्छी किताबें अपने पास रखो और उनके सुन्दर वाक्य प्रतिदिन पढ़ो। जिससे विचारों में पवित्रता आए। पवित्र विचारों की खुशबू आपको महकाती रहेगी। जैसे किताबों में रखे गुलाब महक देते हैं। अकेले रह लेना, मगर गलत लोगों में मत बैठना। अविवेक, निर्दयता, हिंसा, तिकड़म लगाना, योग्य व्यक्ति को टांग लगाकर गिराना, बुरी संगति का परिणाम है।

जो यह कहे कि चोरी करना पाप नहीं, चोरी करते पकड़े जाना पाप है, जो गुनाहगार होने में शर्मिन्दगी महसूस नहीं करता, ऐसे लोग समाज में बुराई को बढ़ाने का कार्य करते हैं। मासूम व्यक्ति भी ट्रेंड हो जाता है बुरी संगति में। बीस साल तक बच्चे को अच्छे संस्कार देकर राम बनाने की कोशिश करने पर भी वह राम नहीं बनता, मगर बीस दिन की बुरी संगति उसे रावण बनाने में कसर नहीं छोड़ती। बुराई का रंग जल्दी चढ़ता है, इसलिए कुसंग से सदा सावधान रहें।

कुसंग का अर्थ है विनाश का संग, पापी का संग, इनसे सदा बचो। सत्संगति शक्ति देती है, कुसंगति कमजोर करती है। व्यक्ति के विकास में कुसंग बाधक बनता है। व्यक्ति के अन्दर की पवित्रता चेहरे का लावण्य अन्दर की शर्म, क्षमाभाव और ऐश्वर्य आदि परमात्मा के दिए हुए वरदान हैं। इनको छीनती है बुरी संगति। अन्दर से शर्म गई तो व्यक्ति गिरता चला जाएगा। अन्दर का सत्य, अन्दर की पवित्राता चली जाती है कुसंग से।

इंसान के सर्वनाश का कारण बनती है कुसंगति। वात्सल्य और करुणामयी कैकेई को मन्थरा की कुसंगति मिल जाने से उसके मन की स्थिति बदल गई। रामजी के प्रति बहुत लगाव था, मगर बुरी संगति के कारण मन में वैर उत्पन्न हुआ और पूरी अयोध्या के लिए शोक पैदा कर दिया। एक ही बुरा व्यक्ति पूरे परिवार, समाज और देश को तहस-नहस कर देता है, कैकेई विधवा हो गई, रोकर चौदह वर्ष बिताए।

जुआरी, शराबी और बुरे लोग अपनी संगति में जल्दी शामिल कर लेते हैं। जुआरी की पहली जीत सबसे बड़ा अपराध है। मन्थरा हो या शकुनी एक ही काफी है घर बिगाड़ने के लिए। एक बुरा व्यक्ति जिन्दगी में आ जाए, उसके साथ न जाने कितने और इकट्ठे होते जाते हैं। समाज में न जाने कितने शकुनी हैं, कितनी मन्थरा हैं, उनकी संगति से बचें। कुसंग से व्यक्ति की मति, कीर्ति और गति नष्ट हो जाती है। बुरी संगति आपसे सब कुछ छीनती है।

कुसंग सदैव त्याज्य है। कुसंग क्या है?जो तुम्हें तुमसे दूर कर दे। जिसका व्यवहार शुरू में सुखदाई हो और बाद में दु:खदाई हो। जो तुम्हारे आनन्द को तुमसे छीन ले वह कुसंग है। शराबी का संग मिले, शुरू में सुख मिलेगा, बाद में आप उसके बिना रह नहीं सकते। कुसंग का रास्ता ही दु:ख देने वाला है, आप अपने नियन्त्राण में नहीं रहे तो दूसरे बुरे लोग आपको नचाएंगे और आप कसमें खाएंगे, पिफर तोड़ेंगे। जो आपकी विवेक शक्ति छीन ले, वह कुसंग है। जिसके मिलने से विवेक जाग जाए वह सत्संग है।

समाज में तरह-तरह की वृत्तियों वाले लोग हैं, एक वह है जिनके पास निराश जाएंगे, मुस्कराते, गुनगुनाते आएंगे और एक वह हैं जिनके पास मुस्कराते जाएंगे भुनभुनाते वापिस आएंगे। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसके जीवन में आनन्द के फूल खिले रहें, उसके लिए सत्य का संग जरूरी है। जहां से जागृति आए, जीवन में जो सही दिशा की ओर लेकर जाएगा वह है सत्संग। सत्संग के लिए हजार काम भी छोड़ने पड़ें तो छोड़ देना।

भगवान जब भी कृपा करते हैं तो धन-सम्पत्ति नहीं देते, किसी सच्चे संत का संग करवा देते हैं। सत्संग ईश्वर की कृपा से ही प्राप्त होता है, किन्तु कुसंग में न रहना तो अपने हाथ की बात है। जीवन में मां-बाप का चुनाव तो आप नहीं कर सकते, जैसे रिश्ते-नाते भगवान ने दिए उनको स्वीकार करें, लेकिन संगति का चुनाव करने में आप स्वतन्त्रा हैं। इसलिए मित्रों का चुनाव करने में आप पूरी सावधानी बरतें।

कोई भी मनुष्य जन्म से भ्रष्ट नहीं होता, जन्म के समय वह बहुत भोला और निर्व्यसनी होता है, उसमें न तो कोई बुरी आदत होती है और न कोई अभिमान होता है। बड़ा होने पर जैसा संग मिलता है, वैसा ही उसका जीवन बनने-बिगड़ने लगता है। बच्चा जैसे लोगों के बीच बैठता है, वैसा ही उसके जीवन में प्रभाव आता है। किसी के साथ बैठते-बैठते आपका बच्चा खराब हो जाए, आपकी नहीं मानता, दूसरों की मानता है, तो बदला क्या? संगति बदली। मां-बाप के संस्कारों का, परिवार का, समाज का, वातावरण का और संगति का बच्चों पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

आयु के जिस भी भाग में जागृति आए, कुसंग का त्याग जरूर करें। विदुरजी ने धृत्तराष्ट्र को बहुत समझाने की कोशिश की, पर जब उन्होंने देखा कि इस व्यक्ति के संग से मेरा जीवन भी भ्रष्ट हो जाएगा। यह सोचकर उन्होंने गृहत्याग किया था और तीर्थ-यात्रा करने चले गए थे, क्योंकि वह कुसंग में रहना नहीं चाहते थे। संग का रंग मन को लगता जरूर है। सत्संग से जीवन में उजाला होता है और कुसंग से अंधकार छा जाता है।

जीवन में यदि छोड़ने योग्य कोई चीज है तो मनुष्य को कुसंग छोड़ना चाहिए। जैसे छुआछूत की बीमारी लगती है, ऐसे ही अच्छे आदमी की अच्छाई भी उड़कर लगती है। खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है। अर्थात् संगति का प्रभाव तो आता ही है। जिन्होंने जीवन की ऊंचाइयों को छूने के लिए आध्यात्मिक मार्ग चुना। उन जागृत महापुरुषों का सान्निध्य प्राप्त करें।

हर व्यक्ति का आभा-मण्डल एक-दूसरे से टकराता है। जिसका आभा-मण्डल बहुत प्रबल है—वह महापुरुष है, वह उपदेश न भी दे, उनके पास बैठने से जिन्दगी की धाराएं बदल जाती हैं। दुनिया में क्रूर लोगों की जीवन धरा सत्संग से बदली। मानव चोला बहुत कीमती है, इसे दुनिया की झूठी चमक-दमक में बर्बाद न करें। कुसंगति से बचें, सत्संगति करें। तभी मानव जीवन सार्थक है।

- आचार्य अनिल शास्त्री

विश्व में सबसे प्रेरक और आदर्श है आर्य समाज का गौरवशाली इतिहास - विनय आर्य

आगरा, उत्तर प्रदेश में 8 दिवसीय कन्या चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर सम्पन्न

नारी के स्वाभिमान और सम्मान तथा उत्थान के लिए संकल्पित आर्य समाज की प्रत्येक इकाई अपने-अपने स्तर पर निरंतर प्रयासरत है। इस क्रम में आर्यवीर दल एवं आर्यवीरांगना दल आगरा उत्तर प्रदेश के समस्त कार्यकर्त्ताओं के पुरुषार्थ से आचार्य हरिशकर अग्निहोत्री जी के नेतृत्व में 'आर्यन इस्टीट्यूट' आवास विकास कालोनी सै.13 करकुंज मार्ग, आगरा के प्रांगण में 8 दिवसीय आवासीय कन्या चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। शिविर में भारत के विभिन्न प्रांतों से आयी आर्य वीरांगनाओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। अत्यन्त अनुशासित और व्यवस्थित दिनचर्या को अपनाते हुए कन्याओं ने योगासन, प्राणायाम, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, लेजियम, डंबल, स्तूप, लाठी, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, जूड़ों कराटे आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसके साथ ही प्रतिदिन आत्मिक, सामाजिक और व्यक्तित्व विकास के लिए विशेष बौद्धिक कक्षाएं आयोजित की गयी थीं। जिनमें आर्य समाज के सिद्धान्त, मान्यताओं और परंपराओं से परिचित होकर कन्याओं ने जीवन में कुशलता और सफलताओं की शिक्षाओं को प्राप्त किया।

16 जून 2024 को इस 8 दिवसीय शिविर के समापन और दीक्षांत समारोह के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने विशेष उद्बोधन में आर्य वीरांगनाओं को संबोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज का इतिहास अत्यन्त प्रेरक और आदर्श इतिहास रहा है। महर्षि दयानंद सरस्वती जी से प्रेरणा लेकर हमारे पूर्वज महापुरुषों ने देश की आजादी, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के संरक्षण और संबंधन के लिए जो बलिदान दिया है। वह विश्व के किसी भी इतिहास से बढ़कर है। आपने देश की वर्तमान चुनौतियों से उपस्थित जन समूह को संबोधित करते हुए कहा कि आज जरूरत है जागने की, वैदिक सिद्धान्त, मान्यता और परंपराओं को अपनाने की। देश और विश्व के कल्याण के लिए मानव मात्र कसे वैदिक पथ पर चलना ही होगा। आपने सभी आयोजकों और उपस्थित अतिथियों का आभार व्यक्त किया तथा आर्य वीरांगाओं को उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाए दी। आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री जी को बधाई देते हुए आपने निरंतर ऐसे सफल आयोजन करने की बात कही। आज इस समापन समारोह में आर्य वीरांगनाओं ने अद्भुत शौर्य और पराक्रम का प्रदर्शन करते हुए कठिन से कठिन व्यायाम, योगासन, लाठी आदि के करतब दिखाये। आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री जी ने सब का धन्यवाद किया। - ***संचालक***

सिविल सेवा परीक्षा -2024 से पूर्व प्रतिभागियों को शुभकामनाएं

आर्यसमाज के आर्य प्रतिभा विकास संस्थान में कोचिंग प्राप्त कर रहे हैं विद्यार्थी

आर्यसमाज द्वारा संचालित एकमात्र सिविल सेवा परीक्षा प्रशिक्षण संस्थान - आर्य प्रतिभा विकास संस्थान, दिल्ली में रहकर लोक संघ सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सेवा परीक्षाओं की कोचिंग प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों से सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने 14 जून को संस्थान पहुंचकर भेंट की और दिनांक 16 जून, 2024 को होने वाली सिविल सेवा परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए शुभकामनाएं दी। आर्य प्रतिभा विकास संस्थान द्वारा कोचिंग प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का विश्वास प्रकट करके संस्थान को आश्वस्त किया।

सिक्किम में आर्यसमाज के निर्माण कार्यों का नीरिक्षण एवं

राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य जी से शिष्टाचार भेंट

भारत के पूर्वोत्तर राज्य सिक्किम में आर्यसमाज के निर्माणाधीन एकमात्र सेवा संस्थान के भवन का नीरिक्षण करने के लिए सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य, धर्मपत्नी श्रीमती सुषमा आर्या एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की अधिकारी श्रीमती सुषमा शर्मा जी रविवार 23 जून, 2024 को गंगटोक पहुंचे। इस अवसर पर वे राजभवन भी गए जहां राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य जी एवं उनकी धर्मपत्नी से शिष्टाचार भेंट की।

10 लोकसभा सांसदों ने संस्कृत में ली शपथ

आर्य समाज की ओर से बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ

18 वीं लोकसभा में निर्वाचित माननीय सांसदो ने सदन में प्रथम दिन हिन्दी, अग्रेंजी के अतिरिक्त विभिन्न प्रांतीय भाषाओं में शपथ ली। इस अवसर पर मातृभाषा संस्कृत में शपथ लेने वालों में **नई दिल्ली से लोकसभा सांसद सुश्री बांसुरी स्वराज,** गोवा से श्रीपाद येसो नाइक, असम से श्री दिलीप सेकिया, तेलगुदेशम पार्टी के बापटला से श्री कृष्ण प्रसाद टेनेटी, सरगुजा छत्तीसगढ़ से श्री चिंतामणि महाराज, बैतूल मध्य प्रदेश से श्री दुर्गादास उईके, सागर मध्य प्रदेश से श्रीमती लता वानखेड़े, राजगढ़ मध्य प्रदेश श्री रोडमल डागर, देवास मध्य प्रदेश से श्री महेन्द्र सिंह सोलंकी और खरगौन मध्य प्रदेश से श्री गजेन्द्र सिंह पटेल प्रमुख थे। सदन में पहले दिन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और उनके मंत्री मण्डल के सदस्यों सहित 262 माननीय सदस्यों ने शपथ ली।

सभी को आर्य समाज की और से बधाई और शुभकामनाएँ।

आर्य समाज द्वारा मनाया गया विभिन्न स्थानों पर अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

आर्य समाज की मान्यताओं के अनुसार यज्ञ की भांति ही योग का स्थान सर्वोपरि है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए योगासन, प्राणायाम और उचित व्यायाम करना प्रत्येक मनुष्य के लिए अनिवार्य माना गया है। इसी भावना और कामना को सांकार करते हुए, 10 वें अर्न्तराष्ट्रीय योग दिवस पर भारत में विभिन्न स्थानों पर आर्य समाज मन्दिरों, आर्यवीर दल, आर्य वीरांगना दल और अन्य संस्थाओं द्वारा प्रतीकात्मक रूप से विशेष अयोजन संपन्न हुए।

दिल्ली : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वाधान में विभिन्न स्थानों पर यज्ञ और योग के भव्य आयोजन संपन्न हुए। 21 जून 2024 को आर्य समाज के संवर्धक प्रचारकों ने जहां योगासन और प्राणायाम की विशेष कक्षाओं का आयोजन किया वहीं यज्ञों के भव्य आयोजन किये, जिनमें सैकड़ों लोगों ने यज्ञों में आहुति दी और योगासन तथा प्राणायाम की कक्षाओं में भाग लिया। इस क्रम में गीता कालोनी फ्लाई ऑवर के ऊपर प्रात: 5 बजे से 7 बजे तक यज्ञ और योग का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

बलिया (उ.प्रदेश) : आर्य समाज के संबर्धक श्री दिनेश आर्य जी, श्री शैल कुमार जी ने अर्न्तराष्ट्रीय योग दिवस पर नागांजी संरस्वती विद्या मंदिर इण्टर कालेज, जीरा बस्ती, बलिया उत्तर प्रदेश के प्रांगण में सैकड़ों युवक, युवतियों को योगासन का अभ्यास कराया। इस क्रम में श्री इंदल आर्य वीर चन्दौली उत्तर प्रदेश ने भी सहभागिता दी।

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश : आर्यवीर दल दिल्ली की विभिन्न शाखाओं में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर विभिन्न शाखाओं ने योगासनों का विशेष अभ्यास कराया गया। जिनमें छोटे-छोटे आर्यवीरों ने सर्वांग सुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार और योगासन किये सभी आर्यवीरों के मुख मण्डल प्रशन्नता से भरपूर थे।

सार्वदेशिक आर्यवीर दल, राजस्थान

सार्वदेशिक आर्यवीर दल के निर्देशन में आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं द्वारा 21 जून 2024 को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ऑनलाइन गायत्री ध्यान कार्यशाला आयोजित की गयी।

जयपुर, राजस्थान : जयपुर राजस्थान से सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक श्री सत्यवीर आर्य जी एवं योग एवं प्राकृतिक चिकित्सक श्री अनिल रावत जी के निर्देशन में विश्व योग दिवस पर गायत्री ध्यान कार्य शाला का ऑनलाइन आयोजन किया गया। जिसमें अनेक स्थानों पर सैकड़ों लोगों ने योग एवं गायत्री ध्यान की पद्धति सीखी और दैनिक जीवन में नियमित योगसन करने का संकल्प लिया।

आर्थिक रूप से कमजोर बारहवीं पास छात्रों के आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृति योजना

आर्य प्रगति छात्रवृत्ति परीक्षा 2024

- पात्रता: आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि तक बारहवीं कक्षा या समकक्ष कक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।
- आयु सीमा: आवदेन की अंतिम तिथि तक 16 से 25 वर्ष ।
- छात्रवृत्ति हेतु अभ्यर्थियों का लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर चयन किया जाएगा।
- पात्रता परीक्षा ऑनलाइन वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के माध्यम से ली जाएगी।
- पात्रता परीक्षा का विषय सामान्य ज्ञान और रिजनिंग पर आधारित होगा।

आवेदन की अंतिम तिथि 15 जुलाई 2024
ऑनलाइन परीक्षा तिथि 21 जुलाई 2024 11:00 AM IST

आवेदन करने के लिए वेबसाइट www.aryapragati.com

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172
E-mail: dss.pratibha@gmail.com

वेद परिवार निर्माण अभियान
50 मंत्र - 1 परिवार
वेद मंत्र कंठस्थ करने के अभियान में भाग लेने हेतु
9810936570 अथवा 9911140756 पर व्हाट्सएप्प करें

एक आर्य परिवार - 200 नए व्यक्ति
ज्ञान ज्योति महोत्सव
महासम्पर्क अभियान
महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयंती के अवसर पर न्यूनतम 200 महानुभावों से संपर्क करने का संकल्प लीजिए
अपने मोबाइल में एप्प डाउनलोड करें Google Play

ज्ञान ज्योति महोत्सव
महासम्पर्क अभियान
महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रति नए महानुभावों के भावों को अंकित करवाएं
भाव स्मरण पुस्तिका
vedicprakashan.com 96501 83336

साप्ताहिक स्वाध्याय

सुधार की तीसरी दशा

(सन् 1870 से 1875 तक)

गतांक से आगे -

रंगाचार्य जी शास्त्रार्थ के मैदान में न आए, परन्तु उनके शिष्य नीचता के मैदान में उतर आए। विषधर सर्प और ईंट-पत्थर फेंककर वे कई उपायों से महर्षि जी को डराने या बेइज्जत करने का यत्न करते रहे। वृन्दावन में धर्म की ध्वजा गाड़कर महर्षि जी मथुरा चले गए। यहां पण्डों, गुण्डों और चौबों के एक बड़े समूह ने महर्षि जी के निवास स्थान पर धावा किया।

धावा करनेवालों के हाथों में डण्डे थे। इधर महर्षि जी का स्थान भी अरक्षित नहीं था। महर्षि जी के भक्त राजपूत सदा पहरे का प्रबन्ध रखते थे। गुण्डा-मण्डली महर्षि जी के द्वार को सुरक्षित देखकर आगे न बढ़ सकी और गालियां बकने लगी। महर्षि जी के सेवक गालियां सुनकर जोश में आ गए, परन्तु शान्ति का उपदेश सुनकर चुप हो गए। महर्षि जी ने उन्हें समझा दिया कि नासमझों की नासमझी देखकर समझदारों को अपनी समझ नहीं छोड़ देनी चाहिये। गुण्डे निराश होकर लौट गए।

यहां से निराश होकर विरोधियों ने दूसरी चाल चली। उन्होंने चांद पर थूकने का विचार किया। महर्षि जी उपदेश दे रहे थे। उस समय विरोधियों के बहकाए हुए एक कसाई और शराब की दुकानवाले ने पुकारकर कहा कि महर्षि जी, आपका कई दिनों का लेखा हो गया है, दाम देकर उसे चुका क्यों नहीं देते? विरोधी निराश हुए, क्योंकि उपस्थित जनता में से किसी ने भी यह विश्वास न किया कि सूर्य कलंकी हुआ है। सभा के अन्त में उन्हें बुलाकर पूछा गया तो उत्तर मिला कि महाराज, हमें मांगीलाल मुनीम ने कहा था कि सभा में जाकर तुम यह वाक्य कह देना, मैं तुम्हें पीछे पुरस्कार दूंगा। विरोधियों ने एक कुलटा को भी धन का लोभ देकर तैयार किया कि वह सभा में जाकर महर्षि जी पर लांछन लगा दे। कुलटा सभा में पहुंची। महर्षि जी व्याखयान दे रहे थे। अमृत की धारा से पापिन के हृदय का पाप धुल गया। उसे पश्चात्ताप हुआ। व्याख्यान की समाप्ति पर स्वयं ही महर्षि जी के चरणों में गिर पड़ी और अपने मानसिक अपराध के लिए क्षमा मांगने लगी। ब्रह्मचारी निर्दोष था। जो निर्दोष है, उस पर फेंका हुआ मल लौटकर फेंकनेवाले पर ही पड़ता है।

मथुरा से चलकर मिर्जापुर व बनारस होते हुए महर्षि जी प्रयाग पहुंचे। यहां पर उनके प्रचार का यश पहले से ही पहुंच चुका था। शिक्षित समाज बड़ी उत्सुकता से आपके व्याखयान सुनने आता था। रायबहादुर पण्डित सुन्दरलाल आपके विशेष भक्तों में से थे। वह बराबर सत्संग में आया करते थे। इन दिनों महर्षि जी ईसाइयों का बड़े जोर से खण्डन किया करते थे। सत्यार्थप्रकाश के लेखन का कार्य भी बराबर होता था।

आपकी योगशक्ति की सूचना समय-समय पर लोगों को मिलती रहती थी। योगशक्ति का ही फल था कि आप परोक्ष की कल्पना कर लिया करते थे और वह कल्पना ठीक निकलती थी। एक बार रायबहादुर पण्डित सुन्दरलाल आदि सज्जन महर्षि जी के स्थान पर बैठे हुए थे। महर्षि जी मुस्कराते हुए उनके सम्मुख आए और उन लोगों से कहने लगे कि एक मनुष्य मेरी ओर चला आ रहा है। उसके आने पर आपको एक कौतुक दिखाई देगा। थोड़ी देर में एक ब्राह्मण मिठाई लिये आ पहुंचा और सामने रख दी। महर्षि जी ने मिठाई का एक टुकड़ा उसे खाने को दिया, परन्तु उसने लेने से इनकार किया और उल्टा कांपने लगा। तब सबने समझ लिया कि अवश्य इस मिठाई में विष मिला हुआ है। मिठाई का

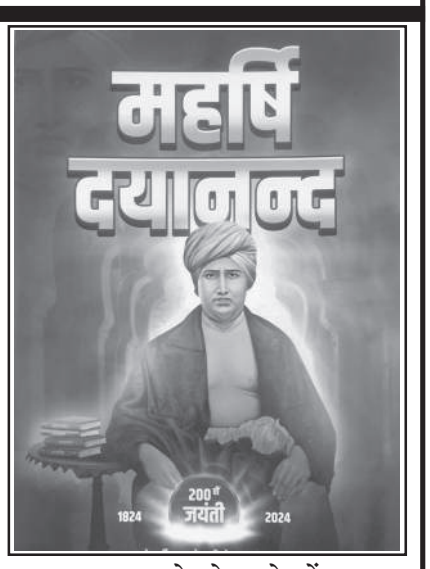

एक टुकड़ा कुत्ते के आगे फेंका गया, जिसे खाकर कुत्ता छटपटाने लगा और शीघ्र ही मर गया। तब तो उपस्थित लोग उस ब्राह्मण को पुलिस के सुपुर्द करने को तैयार हो गए। महर्षि जी ने अपनी दयालुता के कारण उसे क्षमा कर दिया। 1874 ई के अक्तूबर मास के मध्य तक महर्षि जी प्रयाग में रहे, फिर पश्चिम की ओर प्रस्थित हुए।

- क्रमशः

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुनःप्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

Continue From Last Issue

Third Stage of Reform

From 1870-1875 A.D.

Swamiji delivered so many speeches in Kolkata. One of the speeches was delivered at the residence of Mr. Sen. Those speeches had a nice effect. Spirited public got quite satisfied with those speeches. From Kolkata he reached Farrukhabad after visiting Hugli, Bhagalpur and some other place on the way. After having inspection of the school, he reached Aligarh on 25 December, 1873. He stayed at the residence of King Jai Krishna Das. From Aligarh he reached Mathura, Mathura is the capital of Vaishnavs, Rangacharya of Mathura was considered great guru of people believing in Tilak. On the day of Falgun Ekadshi of Samvat 1930 he reached Vrindavan on the occasion of Brahmatsav and stayed at Radha Bagh of Malook Das. So many interesting incidents took place (happened) there.

Thousands of people gather together on the occasion of Brahmotsav in Vrindavan. Swamiji condemmed with full force Idol worship and Tilak. There was great reaction among Pauranik society. People reached Rangacharya. Swamiji also sent message through a letter inviting him for debate. Rangacharya might have heard about incident of debate in Banaras. Rangacharya thought how he could defeat Swamiji whom Acharyas of Kashi. So, in the beginning he denied and sent the message that debate could not be held during days of fair. But after the fair was over, he did not accept the challenge saying he had caught fever.

Rangachary did not accept the challenge of debate, but his devotees decided to insult and frighten Swamiji with the help of poison snakes and stones. After fixing Flag of Dharma in Vrindavan, Swamiji set out for Mathura. A large group of Pandas, goons as and Chaubas tried to attach Swamiji's residence with sticks, devotees of Swamiji took care of Swamiji's residence. The group could not attack directly, so they started abusing Sawamiji. Swamiji's devotees became angry and wanted to teach them a lesson were but pacified by Swamiji's message of peace, Swamiji made them understand. That wise people should not leave their wisdom in reaction of wrong or unwise people. Goons got disappointed and turned back.

After getting disappointed they thought of another wicked plan. They tried to spitting over the moon. One day when Swamiji was delivering a speech, they prepared a butcher and wind seller to disturb the function. The butcher and the wine seller disturbed Swamiji by Saying that he should pay for the meat and mine he has been buying for so many days. But the opponents there disappointed again as none of the audience believed them. When after the program they were asked about their demand, the admitted that they had done so as Muneem Mangi Lal had asked us to do so and assured us of some prize. The opponents had prepared a bed character lady also to enter the meeting hall and put some blame on Swamiji for lust of some money. She went in. But after listening to Swamiji's updesh, bad intentions left her mind and she was feeling very sorry for what she was going to do. She dropped herself in the feet of Swamiji and begged his parahon.

After leaving Mathura Swamiji visited Mirzapur and Banaras and finally reached Prayag. His name and fame had already reached there. Well education society came to listen to his lectures with great curiosity and zeal. Rai Bahaclur sunderlal was one of his great devotees. He attended the lectures regularly. Swamiji condemned Christians strongly during those days. He die the work regarding Satyarth Prakash side by side also.

People felt his knowledge of Yog Shakti regularly. It was the result of Yog Shakti that he could imagine incidents about future and that proved to be true. Once Rai Bahadur Sunder Lal and some other learned persons were waiting for him at his residence. He came smiling and started saying, "Some one is moving towards me. you will find some magic when he reaches here". After some time a Brahman reached there with some sweets in his hand and placed before Swamiji. Swamiji gave a piece of sweets to him to eat, but he refused to eat and started trembling. Then all the persons understand easily that the sweets had been poisoned. A piece of sweets was thrown before a dog. The dog started trembling after eating it and died soon. Then all were ready to take that Brahman to police But kind Swamiji forgiveness him, Swamij stayed in Prayag upto October, 1874 and then started for journey to west.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji.To buy online login www.vedicprakashan.com or contact 9540040339

पृष्ठ 2 का शेष

ईसा मसीह दा खालसा-सैंटा...

जबकि खुलेआम अंधविश्वास की सभाओं को यीशु मसीह के नाम से आयोजित किया जाता है, और उपस्थित सभी लोगों को हाल्लेलुजाह के उच्चारण में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

यहां के 'पादरी' बाइबिल से उपदेश देते हैं और उनके चर्च के स्थल के बाहर आयोजित सत्रों को 'क्रूसेड' (धर्मयुद्ध) कहा जाता है।

ये सत्र आपने आपमें काफी विलासितापूर्ण कार्यक्रम होते हैं और आमतौर पर किसी विशाल तंबू के नीचे या खुले मैदानों, जो पुरुषों, महिलाओं और बच्चों से भर जाते हैं, सलीके से कपड़े पहने और अच्छी तरह से सजा-धजा पादरी एक मंच से भीड़ की अध्यक्षता करता है। आमतौर पर उसकी पत्नी भी साथ होती है जो कभी-कभी खुद भी छोटे-बड़े 'उपचार' कर सकती है।

पादरी एक पानी का छींटा देता है मंच पर दिहाड़ी पर खड़े कलाकार अपने हाथों को अपने सिर के ऊपर लहराते हैं, वे जमीन पर लेट जाते हैं, वे हिलते-डुलते हैं, वे अपने आप को उमेठते भी हैं। एक तरह से यह पूर्ण समर्पण का प्रदर्शन होता है। हालांकि, इन तमाशों का सबसे बड़ा आकर्षण तब आता है जब पादरी तात्कालिक रूप से मौके पर ही 'चमत्कारिक उपचार' का प्रदर्शन करता है।

इन मिनिस्ट्रीज के यूट्यूब चैनल में पादरियों को नेत्रहीनों की दृष्टि बहाल करते हुए, व्हीलचेयर पर बैठे बंधे हुए लोगों को इससे मुक्त करते हुए, और शरीर में उत्पन्न कैंसर, अल्सर और पथरी जैसे विकारों का काम-तमाम करते हुए दिखाया जाता है। लोगों के सिर पर हाथ रखने या उन पर पवित्र जल छिड़कने के माध्यम से सामूहिक 'उपचार' भी होते हैं।

यही नहीं मृतकों को पुनर्जीवित तक करने का नाटक किया जाता है। एक वीडियो क्लिप में प्रॉफेट बजिन्दर सिंह ने एक तीन साल के बच्चे को मौत के मुंह से वापस लाने का दावा किया है। जैसे ही गायकों ने 'यहोवा, यहोवा, यहोवा' का नारा बुलंद किया, बजिन्दर ने एक निष्क्रिय पड़ी बच्ची को उठाया और एक प्लास्टिक की बोतल से उस पर पानी के कुछ छींटों को मारने के साथ ही उसे पुनर्जीवित कर दिया।

एक दूसरे पादरी अंकुर नरूला तो इससे भी आगे निकल गये। जब उन्होंने दावा किया कि उसने एक गर्भपात को पलट दिया और एक महिला के गर्भ में मृत एक बच्चे को फिर से जीवित कर दिया।

कई मिनिस्ट्रीज का दावा है कि प्रार्थना मुफ्त में की जाती है, लेकिन सभाओं के दौरान अनुयायियों को 'चर्च में बीज बोने' जिसका अर्थ है दान करना के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इन मिनिस्ट्रीज के सोशल मीडिया अकाउंट्स के जरिए भी खुलेआम चंदा मांगा जाता है। ऐसे संकेत भी हैं कि कम-से-कम कुछ मिनिस्ट्रीज नकदी में पैसा उगाह रहे हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार, दो शीर्ष मिनिस्ट्रीज जालंधर स्थित पैगंबर बजिन्दर सिंह और अंकुर योसेफ नरूला ने सामूहिक रूप से पिछले पांच वर्षों में अपने बैंक खातों में 60 करोड़ रुपये से अधिक की राशि प्राप्त की है।

ऐसे सभी प्रमुख पादरी फैंसी कपड़ों, बड़ी कारों और लम्बी-चैड़ी निजी सुरक्षा के साथ एक शानदार जीवन शैली प्रदर्शित करते हैं। राज्यभर में सम्पत्तियां भी खरीद रहे हैं। थोड़े समय पहले जालंधर, पटियाला, पठानकोट, मोहाली, जीरकपुर, नवांशहर, नकोदर, राजपुरा और लुधियाना में प्रमुख मिनिस्ट्रीज की कई नई शाखाएं खोली गईं हैं।

यह सब धंधा इतने बड़े स्तर पर चल रहा है कि राज्य से लेकर केंद्र तक की सरकारें मौन हैं। बड़े स्तर पर दुष्ट आत्माओं के नाम पर बीमारी भगाने का ढोंग किया जा रहा है। अपने लोगों को भीड़ में खड़ा किया जा रहा उन्ही लोगों से फिर यह तमाशा कराया जा रहा है। आम गरीब को आस्था और जीसस में विश्वास के नाम पर यह काढ़ा पिलाया जा रहा है। और वाहे गुरु जी दा खालसा, वाहे गुरु जी दी फतह की तरह अब वहां ईसा मसीह दा खालसा सेंटा क्लॉज दी फतह जैसी चीजें सुनने को मिल रही हैं। - ***सम्पादक***

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर दस लाख रुपये की पुरस्कार प्रतियोगिता

कॉमिक्स पढ़ें और जीतें लाखों के ईनाम

-: प्रथम पुरस्कार :-
1,00,000/- रुपये एवं विशेष उपहार।

द्वितीय पुरस्कार : 51 हजार एवं विशेष उपहार (2)
तृतीय पुरस्कार : 31 हजार एवं विशेष उपहार (3)

चतुर्थ पुरस्कार : 5100/- एवं विशेष उपहार (25)
पांचवा पुरस्कार : नकद 2100/- रुपये (100)
छठा पुरस्कार : नकद 1000/- रुपये (250)
सातवां पुरस्कार : नकद 500/- रुपये (250)

प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार विजेता के विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

सर्वाधिक प्रतियोगिता सहभागी वाले विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

नियम व शर्तें -

1. इस प्रतियोगिता में अधिकतम 18 वर्ष तक की आयु के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। सभी प्रश्नोत्तर इसी कॉमिक पुस्तिका में हैं।
2. उत्तर पत्र पूर्ण रूप से भरकर दिए गए कॉलम में अपना व विद्यालय का पूरा नाम व पता (पिन कोड सहित), फोन नम्बर, आयु, अवश्य भरें तथा पते के अन्त में राज्य का नाम अवश्य लिखें। (यदि विद्यालय के माध्यम से भाग न ले रहे हों तो सम्बन्धित संस्था का नाम अवश्य भरें। जैसे गुरुकुल, आर्य समाज, आर्यवीर दल की शाखा आदि।)
3. प्रश्नपत्र को भरकर '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली 110001**' के पते पर (प्रश्नोत्तरी को फोल्ड करके लिफाफे में) भेजें अथवा विद्यालय/संस्था की ओर से सभी प्रश्न उत्तर के साथ कॉमिक एकत्रित करके भी भेजे जा सकते हैं।
4. दिनांक **1 सितम्बर 2025** से पूर्व प्राप्त होने वाले उत्तर पत्र ही प्रतियोगिता में सम्मिलित होंगे। यह तिथि आगे बढ़ाने का अधिकार संयोजक का होगा।
5. उत्तर पत्रों की पूर्ण जांच के पश्चात् सभी ठीक उत्तर वाले पत्रों को पुरस्कार योजना में सम्मिलित किया जाएगा। पुरस्कार संयोजक समिति द्वारा बनाई गई तीन सदस्यीय निर्णायक समिति द्वारा अन्तिम रूप से घोषित किया जाएगा।
6. निर्णायकों की समिति का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा तथा उसे कहीं भी चुनौती नहीं दी जा सकेगी।
7. पुरस्कृत/विजेता बच्चों के नाम दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र '**साप्ताहिक आर्यसन्देश**' में दिए जायेंगे तथा पृथक पत्र द्वारा सूचित किया जाएगा एवं बच्चों के नाम सभा की वेबसाइट **www.thearyasamaj.org** पर प्रदर्शित किये जायेंगे।
8. सभी पुरस्कार '**अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन- 2025**' में दिल्ली के अवसर पर प्रदान किए जायेंगे जिसकी सूचना विजेताओं को अग्रिम भेजी जाएगी। यह योजना हिन्दी तथा अन्य भाषाओं की कॉमिक पर समान रूप से लागू होगी।
9. इस कॉमिक को सुरक्षित रखें क्योकि प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार लेने हेतु कॉमिक की प्रति लाना / भेजना अनिवार्य होगा। - ***संयोजक***

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज दयानन्द विहार दिल्ली-110092		आर्यसमाज मयूर विहार, फेज-2 दिल्ली-110091	
प्रधान	श्री सुभाष बंसल	प्रधान	श्री ओम प्रकाश पाण्डेय
मन्त्री	डॉ. ईश नारंग	मन्त्री	श्री हरबंस लाल शर्मा
कोषाध्यक्ष	डॉ. आशा मेहता	कोषाध्यक्ष	श्री नरेश कुमार चोपड़ा
आर्यसमाज शकरपुर दिल्ली-110092		**आर्यसमाज मगरा पूंजला जोधपुर (राजस्थान)**	
प्रधान	श्री राकेश शर्मा	प्रधान	श्री विमल शास्त्री
मन्त्री	श्री महेन्द्र पाल सचदेवा	मन्त्री	श्री प्रकाश सिंह सांखला
कोषाध्यक्ष	श्री पंकज शर्मा	कोषाध्यक्ष	श्री ब्रह्म सिंह परिहार

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए ***मो.नं. 9650183335 पर*** सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की वैदिक रीति से व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं। - ***संयोजक***

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 24 जून, 2024 से रविवार 30 जून, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 27-28-29/06/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 26, जून, 2024

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ

के अन्तर्गत अखिल भारतीय स्तर पर

आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न सेवा प्रकल्पों की श्रृंखला में

बालवाड़ी प्रकल्प अथवा शिक्षा केंद्र में शिक्षक बनने क सुनहरा अवसर

बालवाड़ी प्रकल्प/शिक्षा केंद्र में अध्यापक बनने हेतु आवश्यक योग्यताएं

आयु 18 वर्ष से अधिक

न्यूनतम 12वीं पास

अध्यापन कार्य में रुचि

अपने गाँव/बस्ती में नयी बालवाड़ी/शिक्षा केंद्र शुरू करने हेतु निम्नलिखित लिंक पर फॉर्म भरें या QR Code स्कैन करें

bit.ly/balwadiapply

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : 9311413920

प्रतिष्ठा में,

असम आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन सम्पन्न
श्रीमती दुर्गादेवी चौधरी प्रधान एवं श्री प्रभाकर शर्मा बने महामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा असम का साधारण सभा अधिवेशन एवं निर्वाचन रविवार दिनांक 12 मई, 2024 को सभा कार्यालय में सम्पन्न हुआ, जिसमें आगामी तीन वर्षों के लिए निम्नांकित पदाधिकारी निर्वाचित हुए -

प्रधान - श्रीमती दुर्गा देवी चौधरी, **उप प्रधान** - श्री पुष्पधर शर्मा, श्री टीकाराम सुवेदी, श्रीमती सत्या भातरा, श्री नित्यानन्द आर्य, श्री रोहित चन्द्र राय।

महामन्त्री - श्री प्रभाकर शर्मा, **उप मन्त्री** - श्री अशोक कुमार गुप्ता, श्री अशोक कुमार सिंह एवं **कोषाध्यक्ष** - श्री कमल मूंधड़ा।

सभी नव निर्वाचित अधिकारियों एवं सदस्यों को सार्वदेशिक सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

श्रीमती दुर्गादेवी चौधरी
प्रधान

श्री प्रभाकर शर्मा
महामन्त्री

श्री कमल मूंधड़ा
कोषाध्यक्ष

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह